विषय-संस्कृत, डॉ० ओम प्रकाश आर्य
बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा) महाराजा कॉलेज, आरा
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र दिनांक - 01/06/2020
कादम्बरी - शुकनासोपदेश - बाणभट्ट

गद्यांश व्याख्या

अशिशिरोपचारहार्योऽति तीव्रो दर्पदाहज्वरोष्मा। सततममूलमन्त्रशम्यो विषमो विषयविषास्वादमोहः। नित्यमस्नानशौचवध्यो बलवान् रागमलावलेपः।

सान्वय व्याख्या :-

(दर्पदाहज्वरोष्मा) अभिमानरूप दाह-ज्वर की गर्मी (अशिशिरोपचारहार्यः) शीतोपचार से भी, चन्दनादि के लेप से भी दूर नहीं होती। (अति तीव्रः) इसलिए अत्यन्त तीक्ष्ण कही जाती है।

(विषयविषास्वादमोहः) विषयरूपी विष के सेवन से उत्पन्न मोह (सततमूलमन्त्रशम्यो विषमः) निरन्तर जड़ी-बूटी और मंत्रों से भी शान्त नहीं होती। (रागमलावलेपः) विषयासक्ति रूपी मल का लेप (स्नानशौचवदपैति) स्नान तथा शुद्धि की क्रियाओं से नष्ट नहीं किया जा सकता।

भावार्थ - अहंकाररूप दाहज्वर की गर्मी शीतोपचार से भी शान्त नहीं होती, इसलिए बहुत तीक्ष्ण कही जाती है। विषयरूपी विष के सेवन से उत्पन्न मूर्च्छा निरन्तर जड़ी-बूटी और मन्त्रों से भी शान्त नहीं होती। आसक्तिरूपी मल का गाढ़ा लेप प्रतिदिन स्नान तथा शुद्धि की क्रियाओं को करने से भी नष्ट नहीं होता।

टिप्पणी - अशिशिरोपचारहार्यः - शिशिरैः उपचारैः हार्यः शिशिरोपचारहार्यः (तृ० तत्पु०) न शिशिरोपचारहार्यः (नञ्)। दर्पदाहज्वरोष्मा - दर्प एव दाहज्वरः दर्पदाहज्वरः (कर्मधारय) तस्य ऊष्मा (ष० तत्पु०) अमूलमन्त्रशम्यः - मूलानि च मन्त्राश्च मूलमन्त्राणि (द्वन्द्व०) मूलमन्त्रैः शम्यः (शम् + क्यप् - शमितुं योग्यः) मूलमन्त्रशम्यः (तृ० तत्पु०) न मूलमन्त्रशम्यः (नञ्)। विषमः - विगतो विरुद्धो वा समः (प्रादि०) असमान, कठिन, कष्टदायी। विषयविषास्वादमोहः - विषयाः एव विषं (क०ध्या०), विषयविषस्य आस्वादः (ष० तत्पु०), विषयविषास्वादात् मोहः (पं० तत्पु०)।

Scanned with CamScanner

(अस्नानशौचवध्यः) स्नानं च शौचं च स्नानशौचे (द्व०) स्नानशौचाभ्यां वध्यः (हन् + यत् - हनो वा यद्वधश्च वक्तव्यः) स्नानशौचवध्यः (तृ० तत्पु०) न स्नानशौचवध्यः (नञ्)। रागमलावलेपः - रागः (रञ्ज् + घञ्) = अनुराग, मैथुनसंबन्धी भावना) एव मलं रागमलं (क० धा०) रागमलस्य अवलेपः (अव + लिप् + घञ्), ष० तत्पु०।

विशेष :- विष से होनी वाली मूर्च्छा जड़ी-बूटियों एवं मन्त्रों के प्रयोग से दूर भी की जा सकती है किन्तु विषम रूपी विषके चखने से ऐसी कठोर मूर्च्छा उत्पन्न होती है कि जड़ी-बूटियों और मन्त्रों से भी दूर नहीं की जा सकती। यहाँ विषयों में विष का आरोप करके उसकी सामान्य विष से अधिकता बतलाई गई है, अतः 'अधिकारूढ़ वैशिष्ट्य रूपक' अलंकार है। 'विषम विषय में 'विष' की एक बार उसी क्रम से आवृत्ति होने से 'छेकानुप्रास' भी है, अतः 'एकवाचकानुप्रवेश सङ्कर' अलंकार हुआ। मल का गाढ़ा लेप भी स्नान अथवा शुद्धिकरण से हटाया जा सकता है, किन्तु प्रणयोन्माद रूप मल का लेप इन उपायों से भी नहीं शुद्ध होता। यहाँ भी राग में मल का आरोप कर सामान्य मल से वैशिष्ट्य दिखाया गया है, अतः 'अधिकारूढ़ वैशिष्ट्य रूपक' अलंकार है। इति ।।

Scanned with CamScanner